भूमिका

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कवियों में कवि अशोक वाजपेयी की पहचान अपने आप में विशिष्ट एंव उल्लेखनीय है। सिर्फ कवि ही नहीं, बल्कि समग्र जीवन की उच्छल अनुगुँजों के कवि, आलोचक, संस्कृतिकर्मी, आयोजक, सम्पादक अशोक वाजपेयी अपनी सक्रियता पारदर्शिता, बहुल प्रतिभा, सृजनशीलता, विचारोत्तेजना और मुखरता से हिन्दी साहित्य के परिदृश्य में हमेशा एक अलग उपस्थिति बनो रखा है। क्योंकि उन्होंने अपनी कविता में हमेशा नई जमीन की खोज जारी रखी हैं। लगभग छः दशक से कविता लिख रहें कवि अशोक वाजपेयी आज भी हिन्दी साहित्य-संसार में उतना ही सक्रिय हैं जितना की पहले थे। इस लम्बी यात्रा के दौरान हिन्दी कविता में आप परिवर्तनों और आन्दोंलनों से अपने को सुपरिचित रखते हुए भी उनकी अपनी अलग राह रही हैं, जिस पर चले और आगे बढ़ने में वे सक्षम रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कवियों में अन्यतम् कवि अशोक वाजपेयी की काव्यानुभूति की बनावट में सच्ची,खरी और एक सजग आधुनिक भारतीय मनुष्य की संवेदना का योग है, जिसमें परम्परा का पुनरीक्षण और आधुनिकता का खोज दोनों साथ-साथ है। इन्होंने अपनी कविताओं में विदेशी काव्य-रूप को अपनाकर उसे भारतीय जन-जीवन तथा धरती सौन्दर्य से सम्पन्न कर महत्वपूर्ण रचनात्मक प्रयास किया है। और इन्हीं कारणों से वे आधुनिक हिन्दी कवियों में एक अद्वितीय और अन्यतम् कवि के रूप में माने जाते हैं। अतः हिन्दी काव्य-संसार में कवि अशोक वाजपेयी की उपस्थिति अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना है।

जीवन और समाज में गहरे आशावाद के कवि अशोक वाजपेयी की कविता-संसार गहरे आवेग, उच्छल ऐन्द्रिकता, बेचैन अध्यात्म, अचुक कवि-कौशल, अनाटकीय बौद्धिकता का संसार हैं, जिसे जानना एक भरे पूरे जिन्दादिल इन्सान की

उसकी सहजता और जटिलता, उसके विवेक और भावातिरेक में जानना है। वे सिर्फ सामाजिक संघर्ष की जद्दोजहद में फँसे कवि नहीं है, बल्कि जीवन के अनछूँए अनुराग, अनदेखे अंधकार और अधखिले फूलों के साथ उन मुरँझाए फूलों को भी प्यार करनेवाले कवि हैं, जिन्हें प्राय: लोग देख नहीं पाते वे प्रकृति से लेकर मनुष्य, पृथ्वी से लेकर ब्रह्माण्ड, माता-पिता से लेकर अज्ञान पितरों, एक बच्चे का खोई हुई गेंद से लेकर जाड़े के दिनों में ठिठूँरते बीड़ी पीते बूँढ़े चौकीदार तक की खबर अपनी कविता से रखते हैं। अपने को कविता का निर्लज्ज पक्षधर कहनेवाले कवि आलोचक अशोक वाजपेयी हिन्दी कि पिछली अर्द्धशती में कविता की समझ, जगह और संभावना बढ़ाने का अधिक जतन करने वालों में अग्रणी रहे हैं। दूसरी भाषा में कहा जाय तो कवि अशोक वाजपेयी अपने कवि जीवन की इस लम्बी यात्रा में हिन्दी साहित्य-इतिहास तथा भारतीय समाज जीवन में आए परिवर्तनों एंव परम्परागत बहती धारा या विचारधारा में अपने आपको पूर्णत : न्यौछावर या समर्पित न करके जीवन, समाज और काव्य-अस्तित्व रक्षार्थ हेतु प्रयोजनानुसार कवि अशोक वाजपेयी ने हरेक मोड़ पर धारा के बिपरीत भी खड़े हुए हैं। कहा जा सकता है कि सच्चे अर्थ में यही एक सच्ची और इमानदार कलाकार की खूबी है, जिसका सशक्त हकदार कवि अशोक वाजपेयी हैं। अत: हिन्दी साहित्य में विशेषत: कविता के क्षेत्र में कवि-चिन्तक अशोक वाजपेयी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। मगर अफसोस की बात है अपनी गरिमा और महत्व के अनुरूप कवि अशोक वाजजेयी को उनका प्राप्य स्थान और सम्मान से वंचित रखा गया है। शायद पीछले अर्द्धशती में हिन्दी साहित्य मे सबसे विवादास्पद रहें कवि अशोक वाजपेयी के प्रति उनके समकालीन कवि आलोचकों को दृष्टि नहीं बल्कि कुदृष्टि अधिक रही हैं। लिहाजा इन्हीं सब कारणों से हो सकता है शोधार्थियों और समीक्षकों के आकर्षणों से अधिकतर बाहर ही रहे। अत: इन उपेक्षाओं के रहते कवि अशोक वाजपेयी की कविता एवं काव्य-

संवेदना सम्यक विवेचन उम्मीद के हिसाब से बंचित ही रहें। जबकि निरपेक्ष एवं उदार दृष्टि तथा आत्मचेतना और गहन-संवेदनशील कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में विन्यस्त सूक्ष्म, गहरा और बहुआयामी अनुभूतियों का अपने देश काल के सापेक्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रहा है। कदाचित यही सब तथ्यों ने मेरी चेतना को अशोक वाजपेयी की कविताओं के प्रति प्रबल रूप से आकृष्ट करके उसके शोध-स्तर पर गहन और विशद अध्ययन के लिए प्रेरित किया। अत: प्रस्तुत शोध-प्रबंध में समग्र रूप में कवि अशोक वाजपेयी की काव्य-संवेदनाओं के विभिन्न आयामों का, उनकी कविताओं में अन्तर्निहित काव्यानुभूतियों के विविध पक्ष को सठिक रूप में उजागर और रेंखांकित करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मुख्यत: कवि अशोक वाजपेयी के अबतक प्रकाशित तेरह काव्य-संग्रह को ही आधार रूप में लिया गया है। हालाँकि उनकी अन्य कृतियाँ भी अध्ययन के दौरान जब तब उनकी काव्य-संवेदना की गहराई को टटोलने में मददगार साबित हुई हैं। कवि अशोक वाजपेयी की काव्य-संवेदना की बारीकी और सूक्ष्मता को समूचित और सही आकलन के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया हैं। प्रथम अध्याय में 'अशोक वाजपेयी का काव्य-कर्म' को लिया गया है। इसमें अशोक वाजपेयी के व्यक्तिगत जीवन के कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर आलोफपात करते हुए उनके साहित्यिक जीवन के हर एक दिशा पर विचार-विश्लेषण किया गया है, मसलन कवि के रूप में, आलोचक के रूप में, सम्पादक के रूप में आदि। विशेषत: एक कवि के रूप में अबतक प्रकाशित उनके तेरह काव्य-संग्रहों का अलग अलग रूप में प्रत्येक संग्रह का सम्यक परिचय प्रस्तुत की गई हैं। फिर लगभग छ: दशक से कविता लिख रहे बुजुर्ग और अनुभवी कवि अशोक वाजपेयी अपने समकालीन हिन्दी कविताओं में अपना स्थान कहा निर्धारित कर पाते ह या इस दौरान हिन्दी कविता में आए

परिवर्तनों और आन्दोलनों से उनका किस तरह का सम्बंध रहा है। फिर वह कौन सी विशेषताएँ और विशिष्टताए हैं जो कवि अशोक वाजपेयी की अपने समकालीनों में एक अलग पहचान बनाने में मदद करती हैं। इन सब बातों पर चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय में कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में उनकी जो जीवन-दृष्टि रहा है या उनकी कविताओं में विन्यस्त जीवन सम्बंधी धारणाओं का अध्ययन किया गया है। इसी के तहत साहित्य का प्रयोजन क्या हैं अथवा जीवन और समाज में साहित्य की भूमिका क्या हो सकता है जैसे सदियों पुरानी प्रश्न पर कवि अशोक वाजपेयी की दृष्टि तथा विचारों का प्रतिफलन उनकी कविताओं में किस रूप में हुआ है। फिर जीवन और कविता का सम्बंध किस तरह का है। जीवन का एक अध्याय 'मृत्यु' जैसे एक अत्यन्त संवेदनशील विषय को कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में किस तरह से चित्रित करते हैं आदि विषयों का गहराई से अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में चित्रित उनकी सौन्दर्य-दृष्टि को गहराई से समझने और पड़ताल करने की कोशिश की गई हैं। सौन्दर्य के पुजारी कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में रूपायित सौन्दर्य के विविध उपादानों को, प्रेम, प्रकृति, सुन्दर, असुन्दर और कविता और काव्येतर कलाओं जैसे खानों में बाँटकर देखा गया है। सौन्दर्य से सम्बंधित इन विविध तत्वों का उनकी कविताओं में किस कदर रूपायन हुआ है, इन्हीं सब बातों की समुचित एंव विस्तृत मीमांसा इस अध्याय में की गई है।

चतुर्थ अध्याय में कवि 'अशोक वाजपेयी की समाज-दृष्टि' के बारे में उनकी कविताओं के आधार पर विचार-विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय में मूलत : 'कविता का परिवेश' उपशीर्षक के अन्तर्गत कवि अशोक वाजपेयी की अपने समसामयिक परिवेश समाज की परिस्थितियाँ तथा समस्याओं का चित्रण

उनकी कविताओं में कहाँ तक हुआ है देखा गया है। विशेषत : समसामयिक दौर के जीवन और समाज-सम्बंधी जो ज्वलन्त और प्रमुख समस्याएँ हैं उन सब से कवि की कविताएँ किस तरह से मुखातिब होते हैं, फिर उनकी कविताएँ अपनी समसामयिक समस्याओं तक महदूद है या अतीत और भविष्य से भी उनका ताल्लुक है? मूलत : कवि अशोक वाजपेयी की समाज सम्बंधी धारणाएँ किस तरह का है और उनकी कविताएँ उसे कहाँ तक प्रमाणित कर पाती हैं आदि मसलों पर केन्द्रित अध्ययन किया गया है। इसके विपरीत 'परिवेश की कविता' में कवि अशोक वाजपेयी की कविताएँ वर्तमान समाज के यथार्थ चित्रण करने में कहा तक खरे-उतरते हैं। अथवा कहीं न कहीं उनकी कविताएँ समाज और सामाजिक यथार्थ से किनारा काटते हुए सिर्फ कल्पना और सपनों की दुनिया तो नहीं बसाते हैं? यदि ऐसा हुआ है तो कहाँ? जैसा कि कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं को लेकर इस तरह की आपत्ति या आरोप लगाया भी जा चुका है। तो इन सबकी सार्थकता कहाँ तक है? इन्हीं सब विषय को देखा-समझा गया है।

पंचम अध्याय में 'अशोक वाजपेयी का काव्यालोचन और उनका काव्य' शीर्षक के अन्तर्गत एक अनुभवी कवि के अलवा आधुनिक मुर्धण्य काव्यालोचक अशोक वाजपेयी की बतौर एक आलोचक के कविता का स्वरूप तथा कविता के तत्वों के बारे में विचार और मान्यताएँ किस तरह का रहा है। फिर आधुनिक हिन्दी काव्यालोचन के क्षेत्र में आलोचक कवि अशोक वाजपेयी की छबि और भूमिका कहाँ तक है आदि प्रश्नों का जवाब तलाशने की कोशिश की गई हैं। विशेषत: काव्यालोचन के जो प्रतिमान फिलहाल काव्य-दृश्य पर मौजूद हैं उन सबके मुकाबले में कवि अशोक वाजपेयी की कविताएँ कहा ठहरती हैं। अथवा काव्यालोचन के मौजूदा प्रतिमान के आधार पर यदि कवि अशोक वाजपेयी की कविताएँ जाँचा-परखा जाय तो कौन सी स्थिति पैदा होती हैं। इसी अध्याय में कवि

अशोक वाजपेयी की कविताएँ परम्परा से किस तरह से संवाद करती है, और परम्परा से उनकी कविताओं का सम्बंध किस तरह का है, आधुनिक कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में भारतीय संस्कृति का अनुगूँज सुनाई पड़ती है कि नहीं । साथ-साथ कवि अशोक वाजपेयी अपनी कविताओं में भावनाओं और अनुभूतियों को जिस तरह से अभिव्यक्त करते हैं जिसे अन्तत : कविता माना-जाता है। कवि की इस अभिव्यक्ति पक्ष पर दृष्टि डालते हुए अभिव्यक्ति के विविध स्वरूप भाषा, छन्द, अलंकार, बिम्ब, प्रतीक आदि का प्रयोग कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में किस रूप में हुआ है उन सबकी विशेषताएँ और उपलब्धियों को उजागर करते हुए रेखांकित करने की कोशिश की गई हैं।

अन्त में उपसंहार में कवि अशोक वाजपेयी की काव्य-संवेदना विषयक समग्र संश्लिष्ट चेतना का समाहार रूप में आकलन किया गया है।